अंक - 14 वर्ष 2025 (अप्रैल-सितंबर 2025)

आरोग्यम् सुख सम्पदा

# स्पंदन

## अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर

(केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्त संस्थान)

## ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES, RAIPUR

(An Autonomous Institution under the Ministry of Health and Family Welfare, Govt. of India)

# अनुक्रमणिका


| क्रमांक | शीर्षक | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 1. | निदेशक की कलम से | 3 |
| 2. | तीरे पारा | 5 |
| 3. | एक वार्ड ऐसा भी | 7 |
| 4. | बीते सफर की गुजरी यादें | 9 |
| 5. | माता-पिता | 10 |
| 6. | स्वच्छता सेवक की व्यथा | 11 |
| 7. | देश हमारा नहीं झुकेगा | 12 |
| 8. | दोषी कौन? | 13 |
| 9. | एक कक्षा की आत्मकथा | 15 |
| 10. | सपना गुदड़ी के लाल का | 17 |
| 11. | डिजिटल युग में प्रभु राम | 18 |
| 12. | ऑपरेशन सिंदूर | 19 |
| 13. | भारत मां | 20 |
| 14. | कृष्ण से आत्मवार्ता | 21 |
| 15. | यह सफर है जिंदगी का | 23 |
| 16. | ख्वाब | 24 |
| 17. | तो फिर क्या हुआ अगर रंग साँवला है मेरा | 25 |
| 18. | खुद से परिचय | 26 |
| 19. | प्रेरणा और प्रयास | 27 |
| 20. | अवसाद | 28 |

| क्रमांक | शीर्षक | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 21. | कोशिश | 29 |
| 22. | स्मृतियों के आँगन में अब भी | 30 |
| 23. | मेरी राष्ट्रभाषा | 31 |
| 24. | विश्व नर्सेस दिवस | 32 |
| 25. | पहलगाम | 33 |
| 26. | जिम्मेदारियों में घटती हुई जिंदगी | 34 |
| 27. | आत्मीयता और सीमाएं | 35 |
| 28. | गुलाम चिड़ियां और आजाद चिड़ियां | 36 |
| 29. | मैं अनिकेत हूँ | 37 |
| 30. | रोज-रिंग्ड पैराकीट | 38 |
| 31. | मुंशी प्रेमचंद जयंती एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन | 39 |
| 32. | हिंदी पखवाड़ा -2025 | 40 |

आरोग्यम् सुख सम्पदा

## निदेशक की कलम से

**"संस्कृति तभी जीवित रहती है, जब भाषा जीवित रहती है।"**

**— रामधारी सिंह 'दिनकर'**

अर्थात् भाषा केवल शब्दों का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह हमारे विचारों, मूल्यों और संवेदनाओं को आगे बढ़ाती है।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा ऑनलाइन हिंदी पत्रिका 'स्पंदन' का चौदहवाँ अंक (अप्रैल-सितम्बर, 2025) अपने नए कलेवर में आपके समक्ष प्रस्तुत है। 'स्पंदन' पत्रिका के यह अंक को अपने सुधि पाठकजनों के कर-कमलों में सौपते हुए अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त मंच बन चुकी है।

भारत की राजभाषा हिंदी केवल संपर्क की भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत, भावनात्मक अभिव्यक्ति और बौद्धिक विमर्श की सशक्त संवाहक है। चिकित्सा, शिक्षा, प्रशासन और अनुसंधान जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग ज्ञान को व्यापक समाज तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 'स्पंदन' इसी उद्देश्य को सार्थक रूप में आगे बढ़ाते हुए संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों की साहित्यिक और रचनात्मक

प्रतिभा को एक सशक्त माध्यम प्रदान कर रही है।

इस अंक में प्रकाशित लेख, कविताएँ और अन्य रचनाएँ पाठकों को ज्ञान के साथ-साथ चिंतन का अवसर प्रदान करती हैं। यह पत्रिका साहित्यिक रुचि को बढ़ाने के साथ-साथ संस्थान के सांस्कृतिक वातावरण को भी समृद्ध करती है।

मैं राजभाषा प्रकोष्ठ की समर्पित संपादक मंडल तथा सभी रचनाकारों को इस सफल प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि 'स्पंदन' का यह अंक पाठकों को रुचिकर, प्रेरणादायी एवं उपयोगी लगेगा तथा भविष्य में भी आप सभी के सक्रिय सहयोग और रचनात्मक सुझावों से यह पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहेगी।

जय राजभाषा! जय हिंदी!

आपका शुभाकांक्षी
लेफ्टिनेंट जनरल अशोक जिंदल
कार्यपालक निदेशक एवं सीईओ, एम्स,रायपुर

# तीरे पारा

रैन आधी अंधेरी के, काले-काले पट पर
बिजली से रंगकारी, मेघ करे डट कर
घुमड़-घुमड़ कर, ऐसे जल बरसे हैं
मानो धरा चूमने को, बरसों के तरसे हैं।
हाँफे एक अकेला, भागे जम-जम के
सीली-सीली लकड़ी, जले जैसे थम के।
हँसे एक नन्हा यूँ, बाँस की टोकरी में
टिमटिम नैना हों कजरे की कोठरी में।
घन घनघोर में लीला रचाई,
जगतपिता से बने पुत्र कन्हाई।
जिसे लिए एक अकेला दौड़े झटपट,
रुका वसुदेव वो नदिया के तट पर।

विश्वधर का सिर भार धरे,
सोचे कैसे यमुना पार करे?

उफन-उफन वो बाढ़ में बढ़ती,
हरिपद छूने को सर तक चढ़ती।
तभी एक घटना घाट घटी थी,
घटा में भी घट-घट नदिया घटी थी।

हट गया पानी यूँ बीच से बाँट के,
निकले हो नरसिंह स्तंभ से फट के।
भीगी-भीगी आँखें, कृष्ण जो भींचे,
उठे शेषनाग, लिए फन के नीचे।
बिछड़ेंगे बेटे से, मन हुआ भारी,
बढ़े वसुदेव संग चिंता सारी,

पग बढ़त-बढ़त, तन चलत-चलत,
जिया डरत-डरत, मन जलत-जलत।
हरि जपत-जपत, नाम रटत-रटत,
चित्त छलत-छलत, काल ठगत-ठगत।

ऐसे नंद नगर के द्वार खड़े
जान-मान मीत को वार पड़े।

कान्हा के भाग से माँ बदलाई,
यशोदा ने बालिका को गोद उठाई।
करेजे का टुकड़ा, चले पीछे छोड़े,
आँख भर देखने को मुख नहीं मोड़े।
है वसुदेव चले कुछ-कुछ रूठे,
बिखेरे हो डाली के पत्ते जो टूटे

आँख पलट-पलट, चाहे झलक-झलक,
पर पलक-पलक, जाए छलक-छलक।
पग खसक-खसक, चले सरक-सरक,
दिल अटक-अटक, कर धड़क-धड़क।
नन्ही बिटिया में खोजे किशन की आशा,
पहुंचे मथुरा, फिर चढ़ गए पाशा।

देखे देवकी को आँखों-आँखों बतलाए,
कुशल है सुत, अब न घबराए।
बंधी तो कंस है, भाग्य पर ताला है,
पुत्र हमारा पर, जग रखवाला है।
तेरी सूनी ममता को फिर से भरने,
बिटिया है भेजी सारे, कष्टों को हरने
भाग्य का लेखा कैसे कोई मोड़े
लौटेगा लल्ला, हम आस क्यों छोड़ें
कंस अति कर होए मतवाला,
प्रभु की नियति का है खेल निराला।

**-डॉ. मितुल सुहाने**
**कनिष्ठ रेजिडेंट**
**स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग**

(हिंदी पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत काव्य-पाठ प्रतियोगिता के छात्र-छात्राएं वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविता)

# एक वार्ड ऐसा भी

क्योंकि थे हम अपनी आदत से मजबूर,
और था भी वह वार्ड बहुत दूर।
तो पहुंचे वार्ड में हम थोड़े लेट
लेकिन ये क्या अभी बैग भी न रखा था कि एक आवाज आई,
बच्चों ड्रेसिंग ट्रॉली करना सेट
फिर क्या था
सुबह-सुबह हॉस्टल में पानी की किल्लत ने इधर-उधर घुमाया और
वार्ड आने के बाद वाइटल्स के लिए पूरे क्यूबिक में हमें दौड़ाया।
करते-धरते घड़ी में बज गए थे दस,
फिर हमने कहा बहुत हो गया अब बस।
लेकिन अभी कहाँ मेरे दोस्त, असली कहानी तो तब शुरू होगी,
जब दरवाजे से डीएनएस महोदय की दस्तक होगी।
जहाँ अब तक पूरे वार्ड में गूँज रहा था इंटर्न-इंटर्न,
अब सारे काम अपने आप होने लगेंगे रिटर्न-रिटर्न।
फिर हमें समझ में आया कि नर्सेस स्टेशन की कुर्सी कैसे डगमगाई,
डीएनएस महोदय ने रौद्र रूप था जो अपनाया।
10 मिनट की सुकून की साँस के बाद ये क्या,
चार दिन की चाँदनी फिर वहीं अँधेरी रात।
अभी-अभी तो वाईटल्स से पीछा छूटा,
कि अब आरबीएस और इंसुलिन का कहर टूटा।
लेकिन श्रीमान डीएनएस का बहुत-बहुत आभार,
क्योंकि उन्होंने कहा था कि अगर दे कोई अपना पूरा काम तो साफ कर देना इंकार।
डीएनएस राउंड के बाद बदला वार्ड का नजारा
क्योंकि एनओ ने चायपत्ती और चीनी का डब्बा उतारा
फिर जो काम करने की फुर्ती जगी हमारे अंदर
जिससे एहसास हुआ कि हाँ है हम डुग-डुगी वाले बंदर।

चाय की चुस्की और दवाइयां देने में हम इतने लीन हो गए,
कि पता ही नहीं चला कब सुबह से हो गए दिन।
उसके बाद वार्ड में आया एक नया बवंडर,
इंफेक्शन कंट्रोल वाले को देखते ही सारी दवाइयां रख दिए अंदर।
कुछ सुनना न पड़े इसलिए एनओ करने लगे अपने-अपने फाइल्स का काम,
और हम हो गए उनके नजरों से अंतर्धान।
लेकिन थोड़ी ही देर में आई एक आवाज,
दस्ताने को पीले डिब्बे में फेकने का किसका है रिवाज।
सब लोगों ने पहले एक-दूसरे को देखा,
फिर सबने मिलकर हमारी ओर देखा।
उसके बाद क्या जितने भी सवाल आए आगे
जवाब देने के लिए कर दिए हमें आगे।
मजे तो तब आए जब इंफेक्शन कंट्रोल वाले की नजर एनओ की अँगूठी पर पड़ी,
हमने मन में कहा क्या ये भी है अब हमने आपके उंगली में जड़ी।
फिर पूछा गया हमसे वही रूढ़िवादी सवाल,
बेटा अपने हाथों का कैसे रखोगे ख्याल।
हमने भी विस्तारपूर्वक हाथों को सेनिटाइज करके दिखाया,
आखिर चार सालों में हमें यही तो है अच्छे से सिखाया।
और अंत में ढ़ेर सारी थकान और थोड़ा ज्ञान लेने के बाद हस्ताक्षर कराने का समय आया,
10 मिनट पहले जाने की खुशी में हमारा चेहरा तारों सा जगमगाया।
बाद में हम जब कभी भी कॉलेज के किस्से सुनाएंगे,
ये खट्टी-मीठी यादे ही खुशियों की बहार लाएंगे।

**-प्रज्ञा पारूल**
**बी.एससी. नर्सिंग चतुर्थ वर्ष**

(हिंदी पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत काव्य-पाठ प्रतियोगिता के छात्र-छात्राएं वर्ग में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कविता)

# बीते सफर की गुजरी यादें

नए शहर, नए लोग, नए रिश्ते, देर से समझ आते हैं,
जिंदगी के सफर में एक पल में सब पीछे छूट जाते हैं।
चंद पलों में ही ना जाने क्यों? उनसे दिल मिल जाते हैं,
फिर कहाँ हर रोज हम उनसे वापस से मिल पाते हैं।
कुछ खट्टी-मिठी यादों संग सफर कटते गया,
इक पल में ही चंद यादों संग सिमट के गया।
कहीं से मिली सजा मोहब्बत ईमान की,
तो कही कुछ के मन को दिल भा सा गया।
ना जाने हवा का रुख, एक पल में किस ओर गया।
यूँ तो जिंदगी का सफर आहिस्ता गुजरते चला गया।
आँखे नम दिल उदास तनिक तो ठहर सा गया,
इक पल को ना जाने क्यों? थम के लहर सा गया।
वक्त था, कुछ यारों संग यारों की, गुजर सा गया।
कुछ बैठ गए दिल पर, तो कोई आँखों में चढ़ सा गया।
किसी से मिले दिल, तो कोई दिल से उतर सा गया।
यूँ तो बीता वक्त, एक पल में गुजर सा गया।
सफर, मंजिल को पाने की जिद थी,
समझो एक पल में वो बिखर सा गया।
वक्त का क्या? वो तो बस चलते जाना है
उम्र का क्या? यादों संग ढ़लते जाना है।

**-मनीषा काबरा**
**बी. एससी. नर्सिंग चतुर्थ वर्ष**

(हिंदी पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत काव्य-पाठ प्रतियोगिता के छात्र-छात्राएं वर्ग में तृतीय पुरस्कार प्राप्त कविता)

# माता-पिता

दुनिया तुम्हारा हाल पुछती है पर वो तुम्हारा हाल जानते हैं।
इस जग में मेरे खुदा वो हैं,
मेरी दिव्य सूरत और सीरत की वजह वो हैं।
मेरी हर जरूरत पूरी हुई, जिसका कारण वहीं है।
मैंने सब्र और तसल्ली रखना इनसे सीखा है,
बिना कहे तो बेइंतहा वात्सल्य जता देते हैं।
वो पहले शख्सियत हैं जिनका झूठ भी मेरे अच्छे के लिए होता हैं।
और वह ही मेरा सत्य होता है,
उनके परित्याग और पुरुषार्थ के सामने मेरा निरुत्साह शर्मसार हो जाता हैं।
कोई मुझे इतना कैसे चाह सकता है,
इन्होंने मुझे इन अचंभों में रखा है।
उनकी डाँट मेरी रूह को चेता देती है,
मेरा प्रोत्साहन उनके हिदायत करने से आता है,
मैं वैद्य शास्त्र से नहीं उनके ख़्याल रखने से ठीक होती हूँ,
मेरे लिए उनके ज्ञान के आगे गूगल भी कम है,
मेरी बेवजह खुशी का राज वो हैं,
मेरी निडरता के पीछे उनका साथ है।
मेरी समझदारी के पीछ उनके सबक का हाथ है,
मैं सही राह पर हूँ जिसकी दिशा उनका अटूट विश्वास है,
मैं बहुत-सी चीजें और लोगों के लिए शुक्रगुजार हूँ।
जिसकी वजह, इनकी दी हुई मुझे जिंदगी हैं,
एहसानमंद, अनुगृहीत, आभारी,
ये सब शब्द बयाँ नहीं कर सकते कि मुझे इनसे कितना कुछ मिला है,
बिना कुछ भी दिए
मैंने आज एक छोटी सी कोशिश की है उनपर लिखने की,
जिनके कारण है मेरी इस दुनिया में मौजूदगी

**-करीना बिश्नोई**
**बी.एससी. नर्सिंग प्रथम वर्ष**

(हिंदी पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत काव्य-पाठ प्रतियोगिता के छात्र-छात्राएं वर्ग में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त कविता)

# स्वच्छता सेवक की व्यथा

आज पुनः घर आए पति,
मुख पर छाया था अवसाद,
कहने लगे गहन शब्दों में
न कीट दिखा, न जीविका के आसार।।
जो जग को स्वच्छ बनाते हैं,
मलिनता दूर हटाते हैं,
पर दुर्भाग्य देखिए इस देश का,
वो सुरक्षा उपकरण तक ना पाते हैं।
न मुखावरण, न दस्ताने,
न जूते, न वस्त्र विशेष,
विषैली वायु में जीते हैं
मृत्यु समीप प्रतीत सदैव।।
साँसे थमती, सीना जलता है,
हर साँस में जैसे जीवन निकलता है,
रोग निरंतर घेरे तन को,
शरीर क्षीण मन टूटता है।
पर हाथों से निकालते गंदगी का बोझ,
ताकि शहर साँस ले सके रोज।।
स्वच्छता के सच्चे प्रहरी,
जिनसे जीवन सुगंधित है,
उनकी ही आहुति से जग में,
हर मार्ग, भवन स्वच्छ व सुसज्जित हैं।।

**-अंजलि ठाकुर**
**बी.एससी. नर्सिंग चतुर्थ वर्ष**

(हिंदी पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत काव्य-पाठ प्रतियोगिता के छात्र-छात्राएं वर्ग में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त कविता)

# देश हमारा नहीं झुकेगा

समझौते के चौराहे पर, कब तक अपना मान बिकेगा।
जाकर कह दो महाशक्ति से, देश हमारा नहीं झुकेगा।

जिसकी हस्ती मिटा न पाए, आक्रांत बन आए लुटेरे।
सूरज को आँखें दिखलाते, जुगनू के दल और अंधेरे।
स्वावलंब के हम आराधक। स्वाभिमान अब नहीं डिगेगा।

हम अनेक हैं, मगर एक हैं, तुमको क्या ये बात सताती?
छद्म रूप से बाँट रहे हो, खुलकर लड़ते फटती छाती
जिसको जो करना है कर ले, आर्यवर्त अब नहीं रुकेगा।

तुम सुविधा पर बिके हुए हो। हमें घास की रोटी भाती।
तुम कोहनी पर टिके हुए हो। हमको अपनी साख सुहाती।
राणा के वंशज हैं हम भी, कब तक रिपु का दंभ ठगेगा।

विश्व शांति का गीत सुनाते, सकल जगत अपनी फुलवारी।
हमने दिया बुद्ध दुनिया को, शांति-अहिंसा हमको प्यारी।
छोड़ेंगे पर नहीं उसे भी, कोई अगर हमको छेड़ेगा।

मर्यादा के हम पोषक हैं, राम हमारे हैं अनुप्रेरक।
यहां कृष्ण बन लीला करते, गीता के गायक-उद्घोषक।
चक्र सुदर्शन रक्षक अपना, पांचजन्य का स्वर गूंजेगा।

**-डॉ. आशुतोष त्रिपाठी**
**चिकित्सा अधिकारी**
**होम्योपैथी विभाग**

(हिंदी पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत काव्य-पाठ प्रतियोगिता के संकाय सदस्य/अधिकारी/कर्मचारी वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविता)

# दोषी कौन?

एक कथा जिसे सबने पढ़ा है, ऐसी महागाथा जिसे सबने सुना है,
एक कथा, जिसे इतिहास कहकर बतलाया गया, कभी कल्पित कहकर ठुकराया भी गया।

एक कथा, अबला कही गई स्त्रियों की, उस सबला की जिसने स्वयं इसे लिखी।
आज उसी कथा को नए रूप में सुनाऊंगी, हर मोड़ पर, प्रश्न नया उठाऊंगी,
निज विवेक के जिस असमंजस में मैं रही, उसकी सैर कराऊंगी।
हर मोड़ पर प्रश्न नया उठाऊंगी।
दोषी कौन? दोषी कौन?
दुर्योधन- या कोई और?
बार-बार सवाल यही दोहराऊंगी, हर मोड़ पर प्रश्न वही उठाऊँगी।

दोषी कौन?
दुर्योधन-या शकुनि?

दुर्योधन-
जिसने स्वयं को ही सिंहासन समझा, न्याय का पथ कभी ना जाना।

या शकुनि-
जिसने ईर्ष्या, अहम् और स्वार्थ का फल सींचा।

दुर्योधन-
जिसने द्यूत क्रिड़ा में पांडवों को बुलाया,
या शकुनि-
जिसने छल से पासों का खेल रचाया।

बलशाली, वीर, पराक्रमी, एक पत्नीव्रता,
एक निष्ठावान मित्र, कुशल योद्धा और कुछ पाने की दृढ़ता
क्या वाकई, सारा दोष सिर्फ दुर्योधन का था,
या इस महाकाव्य में हर पात्र दोषी था?
द्रौपदी का चीरहरण- एक कलुषित प्रसंग,
जिसके चहुँ ओर महाभारत बुनी गई।

द्रौपदी तो सिर्फ एक माध्यम थी,
महाभारत तभी शुरू हो चुकी थी, जब गांधारी ने अपनी आँखों पर पट्टी बांधी थी।
पतिव्रता की आड़ में, स्त्री सौंदर्य पर हुई चोट को आँखें मूँद कर साधी थीं।

कितना श्रेयस्कर होता-

जो गांधारी धृतराष्ट्र की आँखें बनती,
या द्रौपदी-सी अपने अस्तित्व की रक्षा करती।
अंधेपन के आवरण में, हठी बालक वह गढ़ती रही
नेत्र की ज्वाला को, अन्तर्मन में समर्थ वह करती रही।

क्यूँ ना यह उचित होता-
आँखों की पट्टी खोल, द्रौपदी को ही सशक्त कर पाती,
या नेत्रों की ज्वाला से, द्यूत क्रीड़ा में दुशासन को ही भस्म कर जाती।
मातृत्व के संबल पर, कृष्ण को दिया श्राप
यदि उसी संबल को द्यूत क्रीड़ा में हथियार बनाती, स्त्रित्व का उदाहरण बनती।
द्रौपदी को आशीर्वाद कवच पहना, एक स्त्री स्वयं एक स्त्री की रक्षा करती।
द्यूत क्रीड़ा में एक स्वर्णिम इतिहास वह गढ़ती।
पर नहीं, हठी बालक की अंतिम जिद, जरूर इसे समझा होगा,
या कमजोर पांडवों पर अंतिम वार सा भ्रम होगा।
शायद पुत्रों की जीत का ध्यान रहा होगा,
या सत्ता-लालसा को चक्षु त्याग का प्रतिफल माना होगा।

तो दोषी कौन?
दुर्योधन या गांधारी या शकुनि?

**-डॉ. सीमा शाह**
**अतिरिक्त प्राध्यापक**
**जैव रसायन विभाग**

(हिंदी पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत काव्य-पाठ प्रतियोगिता के संकाय सदस्य, अधिकारी/कर्मचारी वर्ग में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कविता)

# एक कक्षा की आत्मकथा

क्या मेरी यानी कक्षा की आत्मकथा सुननी है
कृपया कुछ घंटे बाद
मुझमें तो अभी छात्रों और सूत्रधार माने शिक्षक की मार्मिक व्याख्यान बुननी है।
कॉलेज का मेरा पहला दिन है आज,
देखो कितना प्रक्षलित और स्वच्छ किया गया हूं मैं आज,
मेरे पिता, दादा, परदादा को स्वयं पर था गर्व,
आज मेरी आख्यान पर वे भी करेंगे नाज।
देखो-देखो वे छात्र अपने आँखों में लाए हैं कई सपने, कोई अपने माता-पिता की आँखों में गर्वित होने की आकांक्षाएं लाई या लाया है।
कोई गरीबी की सीमा को घायल पैरों से लांघकर आया या आई है।
वो देखो इन कच्चे घड़ों जैसे मन को
आकृति देने आए हैं शिक्षक
सभी छात्र खड़े हो रहे है कि आए है हमारे....
तभी...
तुम..... उस लाइन में खड़े हो जाओ। नासमझ छात्र जानते नहीं, खड़ा होना होता है शिक्षक के आने से मात्र....
उसके अटके हुए मेज का पल्ला खोलते हुए उसने मांगी क्षमा।
शिक्षक ने गुर्राते हुए पूरी कक्षा से लिखित मांगी माफीनामा।
क्रोध में शिक्षक ने एक सफेद कफन नीचे को..... (माने एलसीडी स्क्रीन)
लगा, इतना गुस्सा कि इतनी सी सफेद चादर में इतने छात्रों को क्या यहीं दफन करेंगे
तभी उस कफन से एक हवाई रोशनी टकराई,
और उसे देखकर शिक्षक बोले, आज हम यह विषय पढ़ेंगे।
शिक्षक उस उजले कफन से बाते करते रहें।
शायद गुस्सा अभी भी चरम पर था।
दो-तीन बार छात्रों के तरफ देखे तो थे,
पर व्याख्यान तो बस उस उजले कफन से ही था।
चालीस मिनट बीत गए थे।
उपस्थिति लेने पंजिका उठाई।
एक-दो करके सबकी उपस्थिति तो ले ली।
पर ना पूछा कि वो छात्र या छात्रा क्यों नहीं आया या क्यों नहीं आई।
छात्र खड़े हो गए, और वह नासमझ छात्र भी इस बार शिक्षक युद्ध फतेह किए हुए जोश में निकल गए,

पाठ्यक्रम का तो अनुसरण हुआ और विषय भी पूर्ण हुए।
मेरी आत्मकथा सुननी थी ना तुम्हे, सुनो और जबाब भी दो।
मेरी सुबह की खुशी शाम तक मायूसियों में बदल गई।
वह जादुई श्यामपट्ट शाम को कक्षा के बाद उस सफेद कफन के नीचे पाई गई।
दादीजी कहती थी उसपर कहानियां और चित्र बुने जाते विषय भले पूर्ण नहीं हो पाता था पर
छात्र विद्या ग्रहण करके जाते थे।
आज तो छात्र भी बदले हुए दिखे।
दादाजी, पिताजी कहते उनके जमाने में पुस्तके हुआ करते थे।
छात्र डाक नहीं, दो-तीन लाया और पढ़ा करते थे,
वे छात्र सुनते थे और अपने संदेह पूछते थे।
आज तो छात्र कुछ टैबलेट कंप्यूटर लाए थे।
शिक्षक उस कफन से और छात्र उस टैबलेट से विचार-विमर्श कर रहे थे।
कोई छात्र चित्र बना रहा था।
तो कुछ ईयरफोन लगाए पता नहीं क्या सुन रहे थे।
आज ज्ञान का भंडार है, फैला है पूरे अंतरजाल या इंटरनेट में
पर मेरी कक्षा का प्राण वो पाठ्यक्रम या विषय भले ही हो।
पर मेरी कक्षा का प्राण वो उजला कफन नहीं, मेरी कक्षा का प्राण बसा है उन छात्रों में।
जो अधूरा बचपन उठाकर आए हैं, अपने भविष्य कि तलाश में.....
मेरी कक्षा के प्राण हैं वे शिक्षक वे सूत्रधार
जो छात्रों के कमियों को उनकी शक्तियों में बदलकर मदद करते हैं लक्ष्य प्राप्ति में
मायूस हूं मैं भले आज कहीं
उस मार्मिक प्राण के खो जाने पर
लेकिन वो विश्वास, वो सम्मान, वो परस्पर निर्भरता का है पोषण की जरूरत
आज नहीं तो कल वो फिर से मिलेगी मुझे कक्षा में यहीं
वो विश्वास मिलेगा मुझे कक्षा में यहीं

**-डॉ. अरूणिता जगझापे**
**सहायक प्राध्यापक**
**फिजियोलॉजी विभाग**

(हिंदी पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत काव्य-पाठ प्रतियोगिता के संकाय सदस्य, अधिकारी/कर्मचारी वर्ग में तृतीय पुरस्कार प्राप्त कविता)

# सपना गुदड़ी के लाल का

दिल्ली नगरी भीड़ भरी, है सपनों का संसार।
गांव छोड़ आया एक युवा, लेकर हृदय अपार।
बैग हाथ में ले लिया, साँस गहरी गंभीर।
मां का फोन जब बजा, तभी निकली वाणी से पीड़।
“ढंग से रहियो बेटवा, रखियो अपना ध्यान।
चा जी के डेरे पहुँची, पढ़ियो लगन लगाए।“
बेटा बोला “हाँ, माँ” फोन किया विराम।
थोड़ा सा सकुचाया, छिपा लिया मुस्कान।
इक टक देखता रहा इमारतें, देखा नगर विशाल।
कहा- “गाँव की शाम में, मिलती शांति निहाल।“
संघर्षों का दीपक लिए, बढ़ा अकेले वह शेर।
बोला बालक दृढ़ वचन, संघर्ष अभी है शेष।
सरकारी सेवा मिले, यही जीवन का ध्येय।
माँ का सपना पूर्ण हो, यही रहेगी अरदास।
थोड़ा सा सकुचाया, फिर छिपा लिया मुस्कान।
हाथ मिलाया संग चला, मन में भरा उजला प्रकाश।
ना परिचय, ना नाम था, फिर भी मन बंधन जुड़े।
मेरी भी अरदास रही, हो यह सपना पूरा
इस गुदड़ी के लाल का।

**-पीयूष उजवने**
**प्रशासनिक अधिकारी (अस्पताल)**

(हिंदी पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत काव्य-पाठ प्रतियोगिता के संकाय सदस्य, अधिकारी/कर्मचारी वर्ग में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त कविता)

# डिजिटल युग में प्रभु राम

सोचो अगर प्रभु श्री राम डिजिटल युग में लेते अवतार
मंथरा नहीं एआई होती कैकेयी की सलाहकार
और अपने निर्णय पर वो ट्रोल होती बारबार
सोचो अगर प्रभु श्री राम डिजिटल युग में  लेते अवतार
कैसे पाषाण का होता उद्धार
कैसे होती केवट की नैया पार
सोचो अगर प्रभु श्री राम डिजिटल युग में लेते अवतार
सोचो अगर प्रभु श्री राम का फेसबुक प्रोफाइल होता
और शूर्पणखा का फ्रेंड रिक्वेस्ट रिजेक्ट होता
शायद बदला होता सीता हरण का स्वरूप
और रावण सीता मां को करता डिजिटल अरेस्ट
सोचो अगर प्रभु श्री राम डिजिटल युग में लेते अवतार
बीत जाता 14 वर्ष का वनवास वेब सीरीज के एपिसोड्स में या
लाइक शेयर सब्सक्राइब में
कैसे अहंकार का अंत होता
कैसे भक्त को ईश्वर मिलता
कैसे संस्कृति का होता विस्तार
सोचो अगर प्रभु श्री राम डिजिटल युग में लेते अवतार
सोचो अगर प्रभु श्रीराम का इंस्टाग्राम प्रोफाइल होता
और सुग्रीव जटायु कोई सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर होते
कैसे भातृप्रेम प्रभु सिखलाते
कैसे वो जीवन का आदर्श बतलाते
कैसे वो मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाते
सोचो अगर प्रभु श्री राम डिजिटल युग में लेते अवतार
कैसे दीप जलाते हम
कैसे उजियारा लाते हम
क्या रामायण गाते हम
सोचो अगर प्रभु श्री राम डिजिटल युग में लेते अवतार

**-डॉ. नेहा रानी वर्मा**
**सहायक प्राध्यापक**
**जैव रसायन विभाग**

(हिंदी पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत काव्य-पाठ प्रतियोगिता के संकाय सदस्य, अधिकारी/कर्मचारी वर्ग में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त कविता)

# ऑपरेशन सिंदूर

सात मई दो हजार पच्चीस की रात
जब हुआ दुश्मनों पर आघात।
भारतीय सेना ने साधा निशाना ॥
"ऑपरेशन सिंदूर" नाम इसे मिला
पाकिस्तान में ये चला।
जहाँ से सजती थी साजिश काली,
पर बर्बादी उन अड्डों पर थी डाली।
पहलगाम का वो दर्दनाक मंजर
छिन गए थे कई घरों के चमन
मासूमों का लहू जो बहाया गया।
उसका बदला देने कदम उठाया गया।
नौ जगहों पर पहुंचा प्रहार,
साफ संदेश - नहीं सहेंगे अत्याचार।
जो बोते हैं दहशत के बीज
उन्हें मिलेगा अब करारा जवाब।
सुना है धर्म देखकर मारा है
भूल गए ये भारत देश हमारा है
जहाँ का धर्मनिरपेक्ष प्रथम नारा है।
अब सोच लो कितना बुरा होगा हाल तुम्हारा,
धर्म पूछकर मारा था।
हम कर्म बताकर मारेंगे।

**-नीलिमा राहंगडाले**
**अवर श्रेणी लिपिक**
**जन स्वास्थ्य विद्यालय**

(हिंदी पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत काव्य-पाठ प्रतियोगिता के संकाय सदस्य, अधिकारी/कर्मचारी वर्ग में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त कविता)

# भारत मां

मेरा इतिहास बहुत ही गौरवशाली रहा
तब मुझे लोगों ने आर्यावर्त  और जम्मू दीप कहा
और पुरातन में जाओगे, त्रेता-द्वापर कालखंड में
स्वयं प्रभु श्री राम और श्री कृष्ण ने मुझ में जन्म लिया।
मैं ऋषि मुनियों की तपोभूमि, साधना का पर्याय रही
महावीर गौतम को जन्म, शांतिदूत धरती की बनी
वेद धर्म सब शुरू किए, मानवता का आधार बनी
जाति, धर्म और बोली अलग, सब को अपनाकर साथ चली।
शांति, संतुष्टि, सहयोग, सदजीवन के आयाम थे सब
सुश्रुत, आर्यभट्ट, कणाद आदि, नैतिकता के परिणाम थे सब
रामराज देखा ना गया, द्वेष लालच  बढ़ते ही गए
इंसानियत को भूल भारतीय, आपस में ही लड़ते गए ।
राजाओं ने जन्म लिया, मुझे टुकड़ों में फिर बाँट दिया
इनकी कमजोरी को परख, मुगलों ने फिर मुझ में राज किया
यह दर्द से मैं उभरी भी ना थी, फिर अंग्रेजों ने वार किया
बार-बार विदेशी आक्रमण ने मुझे पूरा बर्बाद किया।
सहस्त्र वर्ष मैं गुलाम रही, फिर भी कुछ हिम्मत बची रही
उम्मीद थी मेरे अपने मिलकर, फिर मेरा गौरव लौटएंगे
शांति दूत बनकर  फिर से, विश्व पटल पर लहराएंगे
लाखों सपूत जब खड़े हुए, अपना जीवन बलिदान किया
तब जाकर मुझे अस्तित्व मेरा, और पूरा सम्मान मिला
आजाद मुझे तो कर डाला, पर टुकड़े मेरे साथ हुए
कुछ रह गए मेरे आँचल में, कुछ दूर पहुँच बर्बाद हुए।
धीरे-धीरे फिर चल पड़ी, मेरी अपनी गौरव गाथा
विश्वास था मेरे अपने, पार करेंगे हर बाधा
बहुत प्रधान आए गए, सबने निस्वार्थ काम किया
गरीबी आतंक से लड़ते हुए, फिर स्वर्णिम युग प्रस्थान किया।
दुनिया शांति के लिए फिर मेरा आवाहन करती है
अब सशक्त, सबल, आत्मनिर्भर, संकल्पित हूं मैं
जलवायु परिवर्तन, वसुधैव कुटुंबकम का पाठ पढ़ाती हूं
चंदा सूरज भी दूर नहीं प्रतिदिन मैं इबारत गढ़ती हूं
सब लोग आस से देखते हैं फिर सोन चिड़िया बन चहकती हूं।

**-डॉ. राकेश कुमार गुप्ता**
**अतिरिक्त प्राध्यापक**
**पैथोलॉजी एवं लैब मेडिसिन विभाग**

# कृष्ण से आत्मवार्ता

जीवन में है संशय छाया,
सत्य-असत्य का भेद न पाया
खड़ी हूं मैं कुरुक्षेत्र में अर्जुन की भाँति
डगमगाती,लड़खड़ाती,
हे माधव, केवल तुम्ही को पुकारती
अभिमन्यु सी अडिग खड़ी मैं,
अवसाद के चक्रव्यूह में पड़ी मैं,
घाव मेरे मुझसे बोलें
कब तक रक्त से उसको तोलें
गंगा-पुत्र की भाँति मैं
बाणों की शैय्या पर लेटी हूं
फर्क इतना सा है
इस रणभूमि में,
फिर भी मैं प्रत्यंचा ताने रहती हूं
जब योग्यता ही है मानवता की पहचान
फिर तू क्यों कर्ण सा अपमानित करवाएं
साथ दिया न दुर्योधन का मैंने
फिर क्यों केशव समाज मुझे कलंकित बतलाए
माना जख्म जरूरी थे
मुझे लतिका से स्तंभ बनाने में
फिर क्यों कृष्ण दिखलाया वापस वही
रक्तरंजित पल्लव इस अचल काया पे

पीड़ा से है आँखें फटती,
मन में रूद्र सी ज्वाला जलती,
फिर भी खड़ी मौन मैं तुझ-सी
कई शिशुपालों को क्षमा मैं करती

अरे। रावण जैसा दुश्मन होता,
तो पराक्रमी से तो सामना करती,
लेकिन यहाँ तो केवल शकुनि के पासे हैं,
धर्म और सत्य यहाँ उसी सभा की भाँति लज्जा से झुक जाते हैं
हे माधव
जलते लाक्षागृह से रोज सामना होता है,
लेकिन हर बार पांडवों सा न बच पाता मैं
हर क्षण परीक्षा ले रहा हूं धैर्य धरे मैं भी यहाँ,
हर एक कोशिश हो रही मुझे हराने की
हूँ मैं भी खड़ी यहीं पैर जमाए अंगद- सी
मुझमें समाए हैं त्रेता, द्वापर,
तेरा अंश भी मुझमें समाए,
मैं भई हूं महागाथाओं का पात्र
लेकिन-
न कर्ण की तरह केवल व्यथा,
न अभिमन्यु सी अधूरी गाथा,
न हनुमान सा विस्मृत सामर्थ्य,
हे! गोविंद मत होने देना पराजय
तुमसे ही बनी मैं, शक्ति भी तुम्हीं से पाऊं
हे सारथी! बस संग तुम्हारा चाहूँ
हे सारथी! बस संग तुम्हारा चाहूँ।

**-रितिका चौधरी**
**बी.एससी. नर्सिंग चतुर्थ वर्ष**

# यह सफर है जिंदगी का

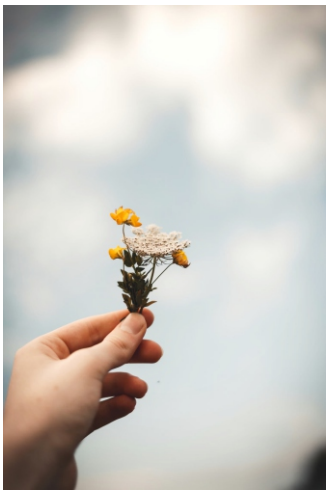

यह सफर है जिंदगी का, चलते रहना है।
कभी हारना है, तो कभी जीतना है।
तो कभी हार के खुद को जिताना है,
तो कभी जीत कर भी खुद को हराना है।
यह सफर है जिंदगी का.....
कभी मचाकर और आगे बढ़ना है,
तो कभी खामोशियों के संग चलना है।
कभी नश्तर भरी राहों से गुजरना है,
तो कभी राह-ए-नश्तर पलकों से चुनना है।
यह सफर है जिंदगी का.....
कभी छिपाकर आँसू, गम को छुपाना है,
तो कभी भुलाकर गम को मुस्कुराना है।
कभी ख्वाबों संग समझौता करना है,
तो कभी अपने सपनों संग उड़ना है।
यह सफर है जिंदगी का.....
कभी अपने रंग में किसी को रंगना है
तो कभी उनके रंग में खुद को रंगना है।
कभी दर्दे-सफर सहते चलना है,
तो कभी गुलजारे चमन महकना है।
यह सफर है जिंदगी का चलते रहना है

**-मनीषा चोमल**
**बी. एससी. नर्सिंग चतुर्थ वर्ष**

# ख्वाब

कुछ अपने लिए, तो कुछ अपनों के लिए ख्वाब हैं

कुछ बिखरते हुए, तो कुछ निखरते हुए से ख्वाब हैं

कुछ शोर मचाते, तो कुछ खामोश से ख्वाब हैं

कुछ पिद्दी से तो कुछ जिद्दी से ख्वाब हैं

हाय हमारे ये अनगिनत से ख्वाब हैं

इन ख्वाबों से दिल्लगी है तभी तो ये जिंदगी है

हमें स्वयं में खूबसूरत रखने वाले ये बड़े नायाब हैं

ये जिंदगी खत्म हो जाये पर ये कभी ना खत्म होने वाले ख्वाब हैं।

यकीन ना हो देखना उस मृत की आँखो में वहाँ अभी भी पड़े कुछ अधूरे से ख्वाब हैं।

**-श्यांतनी श्रद्धेय**
**बी. एससी. नर्सिंग प्रथम वर्ष**

# तो फिर क्या हुआ अगर रंग साँवला है मेरा

रंग साफ नहीं है मेरा, कहते हैं लोग।
तो फिर क्या हुआ अगर रंग साँवला है मेरा..
माँ-पापा की आँखों का तारा हूँ,
दुनिया के सामने आने वाला अगला सितारा हूँ।
गुरुओं का चमकता हीरा हूं,
तो फिर क्या हुआ अगर रंग साँवला है मेरा...
अपने किरदार को महकता और दिल साफ रखने की हर पल कोशिश है मेरी...
अपनी इस कलम से रंगीन करनी है लोगों की जिंदगी।
तो फिर क्या फर्क पड़ता है, अगर रंग साफ नहीं है।
मेरे माथे पर काले दाग है बेशक थोड़े,
पर आखिरी साँस तक देश के मस्तक पर आँच न आने दूंगी।
तिरंगे के तीनो रंग सलामत रखने का जिम्मा है मेरा,
तो फिर क्या हुआ अगर रंग साँवला है मेरा।
साँवली सूरत है और तल्ख जुबानी फन है।
जैसे चाय का रंग और जायके में कड़कपन है।
दुनिया पर रंगों का शुरूर है बहुत
पर मुझे मेरे साँवले रंग पर गुरूर है बहुत ।
मुझे फर्क नहीं पड़ता अगर रंग साँवला है मेरा,
शिकायत नहीं है रब से,
बस एक सवाल जमाने से है
जब नाज है मुझे मेरे रंग पर... तो आपको क्यों एतराज है?
रब की इस रचना में कमियाँ कसना बंद कर दो
ढ़ल जाएगी ये आपकी भी खूबसूरती, चेहरे से सुंदर बनना बंद करो..
चलो एक कोशिश करो अब खुद को अंदर से खूबसूरत बनने की,
चेहरे की खूबसूरती ढ़ल जाएगी एक समय के बाद।
चलो अब कोशिश करो अमर खूबसूरती पाने की।

**-रुक्सार**
**बी.एससी. नर्सिंग चतुर्थ वर्ष**

# खुद से परिचय

लिखो कभी कोई कविता खुद पर भी.....
यूं दुनिया भर को लिखती हो,
आलिंगन लो खुद का भी।
यूं दुनिया भर को तकती हो,
डालो एक नजर खुद पर भी,
कैसी खिलती महकती हो।
तुम्हें कैसे कोई प्रेम करे और क्यूं ही प्रेम करे
जब तुम खुद ही खुद से भागती हो।
कोई देखे तुमको, देखता हो।
कोई कहे तुमको, कहता है।
कोई तुमको चाहे, चाहता हो।
तुम खुद की आस खुद ही हो
क्यूँ कोई तुम पर मरता हो।
तुम ऐसे जीना, जी लेना।
अमृत है जीवन, पी लेना
कहने सुनने में मत फँसना,
लोक लाज से तुम मत डरना।
जो दिल में आए कर लेना,
मर-मर कर जीवन मत जीना, मृत्यु आए तो मर लेना।
पर अभी जिंदा हो तो जी लेना।

**-नीतु कुमारी अरोड़ा**
**बी.एससी. नर्सिंग चतुर्थ वर्ष**

# प्रेरणा और प्रयास

ये आसमाँ छीन गया तो क्या, नया ढूंढ़ लेंगे
हम वो परिंदे नहीं जो उड़ना छोड़ देंगे
मत पूछ, हौसले हमारे आज कितने विश्रब्ध हैं,
एक नई शुरुआत, नया आरंभ तय है
माना अभी हम निःशब्द हैं।
ये पारावर छूट गया तो क्या, नया सागर ढूंढ़ लेंगे।
हम वो कश्तियां नहीं जो तैरना छोड़ देंगे।
कदम चलते रहेंगे, जब तक श्वास है।
परिस्थिति से परे स्वयं पर हमें विश्वास है,
एक रास्ता मिला नहीं तो क्या, नई राहें ढूंढ़ लेंगे,
हम वो मुसाफिर नहीं, जो चलना छोड़ देंगे।
ख्वाबों को महकता रखते हैं।
हम मंजिलों से राब्ता रखते हैं,
नशा हमें हमारी फितरत का
हर हार करती है बुलंद इरादा जीत का।
ये मुकाम नहीं हासिल तो क्या, नए ठिकाने ढूंढ़ लेंगे।
हम वो शय नहीं, जो अपनी तलाश छोड़ देंगे।
हम वो परिंदे नहीं, जो उड़ना छोड़ देंगे।

**-अल्पना सिन्हा**
**निजी सचिव**
**प्रशासनिक विभाग**

# अवसाद

क्यों सब कुछ पा लेने के बाद भी
मेरा मन उदास रहता है।
पूरा काम करने के बाद भी
काम अधूरा सा लगता हैं।
क्यों मेरा मन उदास रहता है।
भगवान जाने कौन से अँधेरे से
मेरा मन घिर जाता हैं।
बाहर निकलने में भी अजीब सा डर लगता हैं।
क्यों मेरा मन उदास रहता हैं।
हे! परमात्मा एक अजीब सा गम सताता है।
मेरा दिल भी अब भरा-भरा सा लगता है।
क्यों मेरा मन इस अवसाद से बाहर नहीं निकल पाता है।
मेरा मन बार-बार आखिर क्यों मरने को करता है।
ये कैसा एहसास हैं जो मुझे पल-पल रुलाता है।
आखिर क्यों मेरा मन इस अवसाद से बाहर नहीं आ पाता है।

**-गिरीश प्रजापति**
**वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी**
**मनोचिकित्सा विभाग**

# कोशिश

हर दिन एक प्रण बनेगा,
हर दिन कोशिश का निकलेगा।
कोशिश करने से हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा।
धरा हिला, गगन गूँजा, ऊँचाइयाँ छू ले जरा
नदी बहा पवन चला,
होगी विजय तेरी... विजय तेरी होगी।
ज्योति सा जल, ज्योति जला
धनुष उठा प्रहार कर..
तू सबसे पहला वार कर।
तट पर बैठे-बैठे तेरे,
हाथ कहाँ कुछ आएगा।
रत्न मिलेंगे तुझको जब,
सागर की तह में जाएगा।
कुछ न आए हाथ,
समझना डुबकी अभी अधूरी है।
चाहे जितना भी मुश्किल हो,
पहला कदम जरूरी हैं।
रात नहीं ख्वाब बदलता है,
मंजिल नहीं कारवां बदलता है।
जज्बा रखो जीतने का क्योंकि,
किस्मत बदले ना बदले पर वक्त जरूर बदलता है।

**-रिकी आशुतोष गुप्ता**
**डाटा प्रविष्टि परिचालक**
**लेखा विभाग**

# स्मृतियों के आँगन में अब भी

स्मृतियों के आँगन में अब भी
विद्यालय की छवियाँ जगमगाती हैं।
दीपक-सी टिमटिमाकर जीवन में,
कठिन राहों को आलोकित कर जाती है।
गुरु को नमन है... सादर नमन है।

**गुरु की महानता**

गुरुजन सभी हमारे पूज्य रहें,
पर कुछ ऐसे भी थे-
जो ध्रुव तारे से भी अडिग और अटल,
पथ दिखाने वाले दिव्य सखे थे।
गुरु को नमन है.... सादर नमन है।

**ज्ञान की मशाल**

गुरु से प्रश्न पूछने पर दंड न मिला
न ही कभी अपमानित किया गया।
ज्ञान की ज्योति जलाकर उन्होंने
हर सवाल को सम्मान दिया।
गुरु को नमन है... सादर नमन है।

**मार्गदर्शन**

अनुभव की ज्योति बिखेरते
सिर्फ उत्तर नहीं, दृष्टि भी देते।
हर जिज्ञासा पर वे सदा
नव ज्ञान के द्वार खोल देते।
गुरु को नमन है... सादर नमन है।

**जीवन की यात्रा में गुरु**
आज जब अपनी यात्रा देखता हूँ,
हर उपलब्धि का आधार वही है।
हर सफलता, हर सम्मान
गुरुजनों के ही उपकार ही हैं।
गुरु को नमन है... सादर नमन है।

**आप भी गुरुवर हैं**
और सच कहूँ तो, वे गुरुदेव
आप भी हैं और आप में से कई।
आपके विचारों ने हर दिन
नव ज्ञान की राह दिखाई।
गुरु को को नमन है... सादर नमन है।

**-अर्जुन सिंह**
**अवर श्रेणी लिपिक**
**नर्सिंग स्थापना**

# मेरी राष्ट्रभाषा

हिंदी को वनवास दें, अंग्रेजी को राज
हमने सत्तर साल में, कैसा गढ़ा समाज।
हिंदी हिंदुस्तान में हुई सेविका आज,
पट्टरानी बनकर यहाँ इंग्लिश करती राज।
हिंदी में है चेतना, हिंदी में है प्राण,
हिंदी में है देश का, स्वाभिमान, सम्मान।
हिंदी सूर कबीर है, हिंदी है रसखान,
आओ सब मिलकर करें, हिंदी का उत्थान।

**-रश्मि शर्मा**
**पुस्तकालयाध्यक्ष वर्ग-01**
**केंद्रीय पुस्तकालय**

# विश्व नर्सेस दिवस

फिर एक बार आज वो दिन हमने
दिल में सजाया है,
फ्लोरेंस नाइटिंगेल के जन्म दिवस को विश्व नर्सेस दिवस मनाया है।
कर्म, प्रतिज्ञा, त्याग शौर्य का
ताज वो मस्तक लगाया है,
कर्तव्यनिष्ठ, पाबंद समय का,
वो जो पाठ सिखाया है।
आज करके सम्मान उन दिग्गजों का,
विश्व में शुभ स्वास्थ्य का परचम लहराना है,
नाईटेंगल की बेटी होने का,
सौभाग्य नर्सिंग में हमने पाया है।
चार साल कठिन तप में,
हमने जो ज्ञान कमाया है,
विज्ञान की इस सफल संयोजना में,
नर्सों ने अहम भूमिका निभाई है।
विश्व युद्ध से लेकर
कोरोना के कहर तक
एक योद्धा के रूप में वो सामने आई है,
इसलिए तो सौभाग्यशाली है,
क्योंकि वह फ्लोरेंस नाईटेंगल की बेटी कहलाई है।
करना है जागरूक युवा और लोगों को,
कि नर्सिंग एक कर्म निराला है
है जीवनदायक काम यह
हर धर्म का इसमें प्याला है।
हर धर्म का इसमें प्याला है।

**-प्रिया हियाल**
**नर्सिंग अधिकारी**
**3ए3 वार्ड**

# पहलगाम

पहलगाम की वादियों में
गोलियों की गूंज थी भारी,
टूट गए सपने जब
अपनों का लहू देखा।
निर्दोष सैलानी मारे गए
परिवारों में छाया अँधेरा,
हाथों से मेहंदी न सूखी थी
कि उजड़ गया सुहाग,
अपनों को अपनों के सामने ही
उतार दिया मौत के घाट।
बस पूछा उन्होंने धर्म
और भून दिया गोलियों से,
वो गोलियों का शोर
आज भी गूंजता है कानों में।
तब भारत माँ ने पूछा बेटों से,
कब तक सहते रहोगे,
तब सैनिकों ने कसम खाई
अब चुप रहना नहीं है गँवारा।
आतंक के हर ठिकाने पर
बरसेगा प्रतिशोध घनघोर।
मई का वो दिन बना इतिहास,
जब चला ऑपरेशन सिंदूर।
न सीमा लांघी, न नियम तोड़े
बस आतंकियों पर चला प्रहार।
शहीदों की आत्मा बोली,
भारत सदा रहेगा तैयार।
सिंदूर जो था सुहाग की निशानी,
अब बना बलिदान की कहानी।
पत्नियों के आँखों में आँसू,
पर गर्व से भरी जुबानी।
पहलगाम की पीड़ा कहती है,
भारत के शूरवीर हमेशा अमर रहते हैं।

**-वंदना आनंद**
**पुस्तकालय परिचारक ग्रेड- 2**
**केंद्रीय पुस्तकालय**

# जिम्मेदारियों में घटती हुई जिंदगी

हर सुबह न जाने कितनी बार
आँखे खुलती है, फिर भी थकी हुई सी होती है।
रातों की नींद जैसे खो गई हो कहीं
हर रोज एक नई जंग एक नई शुरुआत,
फिर भी न वह थकती है न रुकती है।
घर की ममता और बाहर का काम,
दोनों में बँटती जाती है जिंदगी की शाम।
कभी बर्तन कभी लैपटॉप की स्क्रीन,
कभी बड़ों की आशाएं तो कभी बच्चों की जिद।
हर जिम्मेदारी एक चुनौती लगती है,
घर की और दफ्तर की चार दीवारी में जिंदगी कटती है।
जिंदगी के हर पल में कुछ कमी सी लगती है,
फिर भी न वो थकती है न रुकती है।
सुबह जब घर का दर छोड़ती है,
तो मन में रहता है अधूरा काम
मन में कसावट होती है
जब याद आता है बच्चों का अरमान।
पर दफ्तर की घंटी जब बजती है,
घड़ी की सुई बस दौड़ती है,
ई-फाइलों के बोझ तले आँखे थकती है,
फिर भी न वो थकती है, न रूकती है।
दो किनारों के इस कशमकश में,
जिंदगी कहीं खो जाती है,
जिम्मेदारी के बोझ तले दर पर बस छोटी हो जाती है।
जिम्मेदारी का भार बहुत भारी है,
लेकिन महिला तू ना कभी हारी है।
तेरी शक्ति में वह अदृश्य रोशनी है,
जो टूटते हुए रास्तों को रोशन कर जाती है।

**-शाहीन परवीन कादरी**
**कनिष्ठ लेखाधिकारी(अस्पताल)**

# आत्मीयता और सीमाएं

आत्मीयता का अर्थ है गहराई,
मन की नीरव मधुर परछाई।
किंतु जब इसमें सीमाएं जुड़ जाती है,
तो रिश्तों में शुद्धता खिल जाती है।
बिना सीमाओं के अपनापन
कभी-कभी भारी बन जाता है,
संयम का दीप जलाकर है,
विश्वास सदा टिक जाता है।
स्नेह यदि हो मर्यादा के संग,
तो जीवन मधुर गीत-सा रंग
जैसे बहती नदी तट से बँधकर
अपनी धारा में सौंदर्य गढ़कर।
अगर न हो तट, तो नदी भटक जाए,
अपनी राह से हटकर सब कुछ बहा ले जाए।
वैसे ही आत्मीयता जब सीमाओं से सजती है,
तब हर डोर प्रेम की और भी संबल होती है।
सीमाएं न रोकती आत्मीयता की धारा,
बस देती है उसे संतुलन का सहारा।
आत्मीयता तब ही खिलती है,
जब मर्यादा उसका आधार हो,
सीमाओं के संग जुड़कर ही,
हर रिश्ता विश्वास का उपहार हो।

**-अनुराग अग्रवाल**
**कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक**
**निदेशक कार्यालय**

# गुलाम चिड़ियां और आजाद चिड़ियां

चीं चीं चीं चीं करती चिड़ियाँ
फर फर फर फर उड़ती चिड़ियाँ
एक पिंजरे में घर की चिड़ियां, एक थी वन की चिड़ियाँ
मिली अचानक एक दिवस वो, था कुछ विधि के मन में।
इठलाती बोली पिंजरे की चिड़ियाँ
सुन सी चिड़ियाँ वन की.....
तू भी आ जा इस पिंजरे में बात करें दो मन की।
ये सोने का पिंजरा मेरा, और मुफ्त का दाना पानी
मौज करेंगे इस पिंजरे में यही मेरी कहानी।
घर की चिड़ियाँ थी पिंजरे में, वन की चिड़ियाँ वन में
घर की चिड़ियाँ थी पिंजरे में, वन की चिड़ियाँ वन में
वन की चिड़ियाँ बोली सुन री चिड़ियाँ पिंजरे की
पैरों में तेरी बेड़ी है पंखों पर कतरन के निशां
जीवन में बाकी बस, बंदिश लाचारी और अपमान।
पिंजरे में कैद बेबस तुम, सपना एकल बुनती हो
ये सुंदर लम्हों की नहीं, धन की खातिर जीती हो।
चीं चीं चीं चीं करती चिड़ियाँ, फर फर फर फर उड़ती चिड़ियाँ
घर की चिड़ियाँ थी पिंजरे में वन की चिड़ियां वन में।
अब आगे बोली वो चिड़ियाँ –
मैं क्यों फसूं भला बंधन में, मुझे आसमां से प्यार है
जब चाहू जल का मोती लूं, मुझे नदी से प्यार है।
जब ऊंची उड़ान भरूं, अपनी उमंगो से प्यार है
मैं पंछी आजाद, मेरा कहीं दूर ठिकाना रे
इस दुनिया के बाग में मेरा आना जाना रे।
चीं चीं चीं चीं करती चिड़ियाँ, फर फर फर फर उड़ती चिड़ियाँ
घर की चिड़ियाँ थी पिंजरे में वन की चिड़ियाँ वन में।

**-भरत कुमार चाष्टा**
**वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी**

# मैं अनिकेत हूँ

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), रायपुर के सभागार में दिनांक 9 अक्टूबर, 2025 (गुरुवार) को सायं 7:00 बजे हिंदी नाटक "मैं अनिकेत हूँ" का सशक्त एवं भावनात्मक मंचन किया गया। इस नाट्य प्रस्तुति का आयोजन एम्स रायपुर द्वारा किया गया, जबकि मंचन महाराष्ट्र मंडल, रायपुर के सहयोग से संपन्न हुआ।

नाटक "मैं अनिकेत हूँ" एक युवा के आत्मसंघर्ष, पहचान की खोज और मानसिक द्वंद्व को न्यायालयीन पृष्ठभूमि में प्रस्तुत करता है। लगभग 90 मिनट की इस प्रस्तुति में भारतीय न्याय संहिता की धाराओं 419 एवं 448 के अंतर्गत चल रही सुनवाई के माध्यम से कहानी आगे बढ़ती है, जहाँ गवाहों के बयान और संवाद चिकित्सा जगत में हो रही नवीन क्रांतियों तथा मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े गहरे प्रश्नों को रेखांकित करते हैं।

नाटक के केंद्रीय पात्र अनिकेत की भूमिका में वरिष्ठ रंगकर्मी श्री शशि वरखंडकर ने अत्यंत प्रभावी और संवेदनशील अभिनय प्रस्तुत किया। विशेष बात यह रही कि उन्होंने न केवल मुख्य भूमिका निभाई, बल्कि इस नाटक के निर्देशक के रूप में भी अपनी नई पारी की सशक्त शुरुआत की। उनके सशक्त संवाद, भावपूर्ण अभिव्यक्ति और मंच पर उपस्थिति ने दर्शकों को अंत तक बाँधे रखा।

नाटक में सरकारी वकील की भूमिका में श्री चेतन दांदवे, मीनाक्षी की भूमिका में डॉ. अनुराधा दुबे, सावित्री के रूप में भारती पलसोदकर, धर्मा की भूमिका में रविंद्र ठेंगड़ी तथा डॉ. शिरोडकर के रूप में रंजन मोडक ने अपने-अपने पात्रों को सजीव किया। इसके अतिरिक्त डॉ. प्रीता लाल, समीर टल्लू, विनोद राखुंडे, पंकज सराफ, श्याम सुंदर खंगन, दिलीप लांबे एवं डॉ. अभय जोगलेकर सहित अन्य कलाकारों का अभिनय भी दर्शकों द्वारा सराहा गया।

मंच सज्जा एवं तकनीकी पक्ष ने नाटक की गंभीरता को और अधिक प्रभावशाली बनाया। सेट डिज़ाइन का कार्य अजय पोतदार एवं प्रवीण क्षीरसागर के निर्देशन में किया गया, जिसने पूरे नाटक में वास्तविक न्यायालय का वातावरण रचा। रूप सज्जा का दायित्व दिनेश धनकर, वेशभूषा का कार्य डॉ. अभया जोगलेकर, प्रकाश व्यवस्था लोकेश साहू एवं नितिन यादव, संगीत सुमीत मोडक तथा नेपथ्य एवं बैकस्टेज प्रबंधन अस्मिता कुसरे द्वारा कुशलतापूर्वक संभाला गया।

कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर एम्स रायपुर के कार्यपालक निदेशक एवं सीईओ लेफ्टिनेंट जनरल अशोक जिंदल (सेवानिवृत्त), उप निदेशक लेफ्टिनेंट कर्नल डी.एस. चौहान, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. रेनु राजगुरु एवं महाराष्ट्र मंडल के अध्यक्ष श्री अजय मधुकर काले द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर लेफ्टिनेंट जनरल अशोक जिंदल (सेवानिवृत्त) ने कहा कि यह नाटक मानसिक स्वास्थ्य और आत्मपहचान जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर समाज को गंभीरता से सोचने के लिए प्रेरित करता है।

नाटक के दौरान दर्शक उस क्षण विशेष रूप से भावविभोर हो उठे, जब अनिकेत का संवाद—

**"जरा एक बार मेरे बारे में सोचो... मैं मरा भी हूँ और जिंदा भी... क्या विडंबना है..."**

सभागार में गूंज उठा और पूरे वातावरण को स्तब्ध कर गया।

यह उल्लेखनीय है कि श्री शशि वरखंडकर ने लगभग 23 वर्ष पूर्व भी इसी नाटक में अनिकेत की भूमिका निभाई थी और उस समय डॉ. अनुराधा दुबे भी इस नाटक का हिस्सा रही थीं, जिससे यह मंचन स्मृतियों और अनुभवों का अनूठा संगम बन गया।

कार्यक्रम में संस्थान के चिकित्सकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। नाटक "मैं अनिकेत हूँ" न केवल एक उत्कृष्ट नाट्य प्रस्तुति सिद्ध हुआ, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा सामाजिक संवेदनशीलता को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल भी रहा।

# रोज-रिंग्ड पैराकीट

बैतूल (मध्य प्रदेश)
30.11.2025

**-(छायाकार) डॉ. आलोक सिंह**
**सह-प्राध्यापक**
**फार्माकोलॉजी विभाग**

रोज़-रिंग्ड पैराकीट, जिसे आमतौर पर तोता कहा जाता है, भारत का एक बहुत ही परिचित पक्षी है। इसका शरीर चमकीले हरे रंग का होता है और पूँछ लंबी व नुकीली होती है। वयस्क नर के गले में गुलाबी और काली रंग की स्पष्ट रिंग दिखाई देती है, जबकि मादा और किशोरों में यह नहीं होती। इसकी चोंच लाल और मजबूत होती है। यह जंगलों, खेतों, बाग-बगीचों और शहरों में आसानी से देखा जाता है। झुंड में रहने वाला यह पक्षी बहुत चंचल और आवाज़ करने वाला होता है। फल, बीज और अनाज इसका मुख्य भोजन है।

# मुंशी प्रेमचंद जयंती एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 31 जुलाई, 2025 को एम्स, रायपुर के तत्त्वावधान में राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा भारतीय समाज के महागाथा के लेखक एवं 'उपन्यास सम्राट' मुंशी प्रेमचंद जी की 145 वीं जयंती मनाई गई। इस विशेष अवसर पर प्रो.(डॉ.) एली महापात्र, अधिष्ठाता(शैक्षिक) मुख्य अतिथि एवं अन्य विशिष्ट अतिथि डॉ. मृत्युंजय राठौड़, प्राध्यापक, शरीर रचना विज्ञान विभाग, डॉ. राकेश कुमार गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, पैथोलॉजी एवं लैब मेडिसिन विभाग द्वारा उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं श्रद्धा-सुमन अर्पित किया गया तथा दीप प्रज्वलन कर इस कार्यक्रम की शुभ शुरुआत की गई। कार्यक्रम में प्रेमचंद जी का जीवन परिचय एवं उनकी प्रमुख कहानियों व उनकी उपन्यासों के बारे में संस्थान के छात्र-छात्राओं, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं अधिकारियों के समक्ष सारगर्भित व्याख्यानों की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम में प्रेमचंद जी के उपन्यास 'प्रतिज्ञा' एवं उनकी कहानी 'पूस की रात' के सारांशों की प्रस्तुति के माध्यम से उपस्थित छात्र-छात्राओं, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं अधिकारियों को प्रेमचंद जी की प्रमुख रचनाओं को पढ़ने हेतु प्रेरित किया गया जिससे हिंदी भाषा के प्रति युवाओं का रुझान बढ़ें। इस कार्यक्रम में प्रेमचंद जी की प्रमुख रचनाओं से संकलित सूक्तियों पर भी चर्चा की गई जिससे व्यक्तित्व परिष्कृत हो और प्रगतिशील समाज की नींव रखी जा सकें। इस विशिष्ट अवसर पर संस्थान के एमबीबीएस छात्र-छात्राओं द्वारा नुक्कड़ नाट्य रूपांतरण प्रेमचंद जी की कालजयी उपन्यास 'गबन' की प्रस्तुति की गई। इस विशिष्ट अवसर पर संस्थान के मुख्य अतिथि के रूप में अधिष्ठाता (शैक्षिक) महोदया प्रो.(डॉ.) एली महापात्र ने दर्शक दीर्घा में उपस्थित लोगों से 'हिंदी साहित्य के अमूल्य धरोहर एवं महत्त्वपूर्ण विचारों को विलुप्त होने से बचाने का आह्वान किया'। उन्होने सभी संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं अधिकारियों से अस्पताल में नैतिक वातावरण पर विशेष बल देने का आग्रह किया। उन्होने संवेदना को व्यवहार में लाने पर विशेष बल दिया। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित लोगों के मध्य प्रेमचंद जी से संबंधित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया तथा उन्हें पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन सुश्री निधि जयसवाल, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक द्वारा किया गया। इसके साथ ही साथ इस कार्यक्रम के आयोजन में सहायक के तौर पर शिवानी कुमारी जी भी रहीं। इस कार्यक्रम का समापन डॉ. राकेश गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, पैथोलॉजी एवं लैब मेडिसिन विभाग ने इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य अतिथियों एवं सभी संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को धन्यवाद ज्ञापन किया।

# हिंदी पखवाड़ा -2025

राजभाषा प्रकोष्ठ, एम्स, रायपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 17 से 30 सितंबर, 2025 तक हिंदी पखवाड़ा 2025 अत्यंत उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने तथा हिंदी भाषा के प्रति रुचि जागृत करने के उद्देश्य से हिंदी पखवाड़ा 2025 का आयोजन किया गया। इस वर्ष संस्थान में निबंध प्रतियोगिता, आशु भाषण प्रतियोगिता, स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता, टंकण प्रतियोगिता, श्रुत लेख प्रतियोगिता, चिकित्सा शब्दावली, प्रशासनिक शब्दावली, वाद-विवाद एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतोयोगिताओं में 438 संकाय सदस्य, अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता के अंतिम दिन दिनांक 30 सितंबर, 2025 को पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य विशिष्ट अतिथि के रूप में संस्थान के लेफ्टिनेंट जनरल अशोक जिंदल (सेवानिवृत्त) कार्यपालक निदेशक एवं सीईओ, प्रो. (डॉ.) एली महापात्र, अधिष्ठाता(शैक्षिक) तथा लेफ्टिनेंट कर्नल धर्मवीर सिंह चौहान, उप-निदेशक (प्रशासन) उपस्थित रहें। इन मुख्य एवं विशिष्ट अतिथि के द्वारा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। हिंदी पखवाड़ा 2025 का भव्य आयोजन राजभाषा प्रकोष्ठ के संकाय प्रभारी प्रो.(डॉ.) उज्ज्वला गायकवाड, प्राध्यापक, सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग तथा डॉ. राकेश कुमार गुप्ता, अतिरिक्त प्राध्यापक, पैथोलॉजी एवं लैब मेडिसिन विभाग के मार्गदर्शन में किया गया। हिंदी पखवाड़ा 2025 का संचालन सुश्री निधि जयसवाल, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, द्वारा किया गया। इसके साथ ही साथ इस कार्यक्रम के आयोजन में सहायक के तौर पर श्रीमती शिवानी कुमारी जी भी रहीं। इस समारोह में विजेता प्रतिभागियों को 2,25,000/- रु. की पुरस्कार राशि का वितरण किया गया।

# संपादकीय समिति


## संरक्षक

**लेफ्टिनेंट जनरल अशोक जिंदल**

कार्यपालक निदेशक एवं सीईओ

## विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

### मार्गदर्शक

लेफ्टिनेंट कर्नल धर्मवीर सिंह चौहान

उप-निदेशक (प्रशासन)

### मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) उज्ज्वला गायकवाड

### संपादक

प्रो. (डॉ.) राकेश कुमार गुप्ता

### सह संपादक

सुश्री निधि जयसवाल

### टंकण

सुश्री शिवानी कुमारी

### पृष्ठ सज्जा

नृत्य गोपाल


राजभाषा प्रकोष्ठ 'स्पंदन' पत्रिका में प्रकाशन के लिए मौलिक रचनाएं आमंत्रित करता है। एम्स, रायपुर के अधिकारी, संकाय सदस्य और कर्मचारी स्वरचित रचनाएं rajbhashaprakoshth@aiimsraipur.edu.in पर ई-मेल के माध्यम से प्रेषित कर सकते हैं।

**इस पत्रिका में प्रकाषित रचनाएं लेखकां के निजी विचार/भावनाएं हैं।**

आरोग्यम् सुख सम्पदा

# अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर

*(केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्त संस्थान)*

# ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES, RAIPUR

(An Autonomous Institution under the Ministry of Health and Family Welfare, Govt. of India)


https://www.aiimsraipur.edu.in

https://twitter.com/aiimsraipur

https://www.facebook.com/
All-India-Institute-of-Medical-SciencesAIIMS-Raipur

rajbhashaprakoshth@aiimsraipur.edu.in



राजभाषा प्रकोष्ठ, अ.भा.आ.सं.,
रायपुर द्वारा प्रकाशित और प्रसारित